Shri Malhotra himself admitted that gangs are coming from Ghaziabad. Similar type of incidents have taken place in Ghaziabad which comes in Uttar Pradesh.

Here the point is not of which Government is in charge of the law and order situation. The point is of the manner in which we are conducting the law and order activities. This is the situation on the 50th Anniversary of the Republic. It is a shame on us. It is a blot on us. Those who fought for our freedom did not win freedom for meting out such treatment to innocent children. Therefore, let us not politicise the issue. I would request the Government to react to it and discuss this issue with all the political parties. This kind of a problem should be singled out for special treatment so that it does not recur. Thank you.

RE: LOSS OF LIFE AND PROPERTY DUE TO INCIDENTS OF MAJOR FIRES IN DELHI

श्री नरेन्द्र मोहन (उत्तर प्रदेश): महोदया, बड़ी कृपा की आपने कि मुझे बोलने का समय दिया। मैं वाक-आउट की वजह से पीछे मुड़ गया था और मैं नाम नहीं सुन सका। यह जो आधे घंटे का समय बढ़ा दिया गया है...**(व्यवधान)**...

कृषि मंत्री (श्री चतुरानन मिश्र): आप बोल लीजिए। आप बहस में मत पड़िए। आप अपनी बात कम्प्लीट कीजिए।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): डान्ट वेस्ट योर टाइम। नरेन्द्र मोहन जी आप बोल दीजिए।

श्री नरेन्द्र मोहन: मैडम, मैं बोल रहा हूं। चुप हो जाएं तो मैं बोलूं...**(व्यवधान)**...

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): नहीं, आप बोलिए। एक बजने में अभी दो-तीन मिनट बाकी हैं।

श्री नरेन्द्र मोहन: मैडम, उपहार सिनेमा में जो ट्रेजडी हुई है, जो घटना हुई है, उसके साथ तीन प्रमुख बातें जुड़ी हुई हैं। एक इतना बड़ा अग्निकांड हुआ, उसमें 60 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई, उसकी जांच होनी है। जांच सीबीआई के द्वारा कराई जाये। उसकी जांच पुलिस द्वारा हुई है। जो प्रशासनिक जांच कमेटी की रपट है उसको ही क्या सही मान लिया जाए? मुख्य मंत्री यह मांग कर रहे हैं कि जांच सीबीआई के द्वारा कराई जाये क्योंकि उपहार सिनेमा की ट्रेजडी से जुड़े हुए तमाम साक्ष्यों को मिटाया जा रहा है। अगर यह वास्तविकता है तो सरकार को यह बताना चाहिए कि इस संदर्भ में उसकी नीति क्या है, इसमें क्या कठिनाई है कि उसकी सीबीआई जांच नहीं कराई जा सकती है?

मैडम, इसका एक और पक्ष है। इस तरह के और भी अग्निकांड हुए हैं, जैसा कि उपहार सिनेमा में हुआ। यह अग्निकांड इसलिए होते हैं कि देश में भ्रष्टाचार बहुत है। अग्निकांड से जुड़े जो तमाम नियम और कानून हैं, उनका उल्लंघन करके नक्शे पास किए जाते हैं

[1.00 P.M.]

उनका सही तरीके से परिपालन नहीं होता। उनकी वार्षिक समीक्षा नहीं होती। अगर वार्षिक समीक्षा होती रहे, सही परिपालन होता रहे तो अग्नि-कांड की स्थिति नहीं बनने पाती। भ्रष्टाचार न होता तो ऐसी स्थिति न आने पाती, यह बात सामने आ चुकी है। प्रश्न यह है कि हमारे यहां कानून तो बन चुके हैं, तो हम उनका परिपालन क्यों नहीं कर पाते? दिल्ली में कई सरकारी भवन ऐसे हैं, मल्टीस्टोरी बिल्डिंग ऐसी हैं, जिनमें अग्नि-कांड का पूरा पूरा खतरा है। लेकिन उनकी ओर अभी तक भारत सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया। दिल्ली में अनेक सिनेमा घर ऐसे हैं, होटल ऐसे हैं, रेस्टरां ऐसे हैं जहां कभी भी भारी अग्निकांड हो सकता है। लेकिन अभी तक कोई ऐसी कार्यवाही नहीं की गई है जिसके आधार पर यह किया जा सके और भविष्य में इस तरह के अग्निकांड न हों जिस प्रकार का अग्नि-कांड उपहार में हुआ। इसका तीसरा पक्ष भी है। जब भयानक अग्नि-कांड हो जाते हैं तब उनके कारण जो क्षति होती है इससे उनको बचाने की सामर्थ्य क्या दिल्ली के पास है? दिल्ली में उपहार अग्नि-कांड हुआ तो अग्नि शामक दल को वहां पहुंचने में लगभग 40 मिनट लग गए। यह स्थिति क्यों आई? हमारा अग्नि-शामक दल तत्काल क्यों नहीं पहुंच पाता? ऐसी ही स्थिति एम्बुलेंस की थी। वे भी समय पर नहीं पहुंच सकीं। दुर्भाग्य की बात यह है कि दिल्ली में आए दिन बड़ी-बड़ी दुर्घटनायें हो रही हैं लेकिन दिल्ली के पास कोई ट्रॉमा सेंटर नहीं है। "एम्स" और लोहिया अस्पताल में कोई ऐसी व्यवस्था नहीं है कि जब कोई गंभीर दुर्घटना हो तो उसको हम संभाल सकें मानव क्षति को हम कम कर सकें। अगर समय पर सही

चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध हो जाती तो बहुत से व्यक्तियों की जान उपहार ट्रेजडी में बचाई जा सकती थी। प्रश्न यह है कि जब दुर्घटनायें होती हैं तब प्रधानमंत्री से लेकर स्वास्थ्य मंत्री तक सभी इस प्रकार की बातें करते हैं कि दिल्ली में ट्रॉमा सेंटर खोल दिया जाएगा, एम्बुलेंस समय पर पहुंच जायेंगी। लेकिन अफसोस की बात है कि इतने वर्षों के बाद भी ट्रॉमा सेंटर दिल्ली में नहीं खोला गया है। "एस" को मांग ट्रॉमा सेंटर खोलने के बारे में पड़ी हुई है। पिछली केंद्र की सरकार इसकी व्यवस्था कर चुकी थी लेकिन फिर भी इस बारे में कोई समुचित व्यवस्था नहीं की गई है। मैं सरकार से जानना चाहता हूं, माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि मंत्री जी क्या आप बता सकेंगे कि प्रधानमंत्री जी ने जो आश्वासन उपहार अग्नि-कांड पर दिया था कि दिल्ली में ट्रॉमा सेंटर खोला जाएगा, क्या उस आश्वासन का पालन होगा? मंत्री जी, मैं आपसे जानना चाहता हूं कि प्रधानमंत्री जी का दिया हुआ यह आश्वासन क्या निकट भविष्य में पूरा हो जाएगा? क्या दिल्ली में ट्रॉमा सेंटर खोला जा सकेगा? क्या दिल्ली में ऐसी व्यवस्था हो सकेगी कि जो बड़ी बड़ी मल्टी-स्टोरीड सरकारी बिल्डिंग हैं, उनको अग्नि-कांड से बचाने के लिए जो पर्याप्त उपाय नहीं हैं, वहां इसके लिए पर्याप्त उपाय कर दिये जाएंगे? क्या आप यह आश्वासन सरकार की ओर से दे सकते हैं कि सरकार की तरफ से, दिल्ली में जो होटल हैं, या दिल्ली में जो इस प्रकार के सिनेमा घर हैं, भविष्य में वहां इस प्रकार की अग्नि-कांड की स्थिति नहीं बनेगी, यह मैं आपसे स्पष्ट आश्वासन चाहता हूं। ऐसा लगता है कि उपहार ट्रेजडी से सरकार ने कोई सबक नहीं लिया है। अगर ऐसी स्थिति होगी तो कभी भी एक बड़ी दुर्घटना यहां हो सकती है। मैं जानता हूं कि यह आपका महकमा नहीं है। यह गृह मंत्रालय के अन्तर्गत आता है। लेकिन यह आश्वासन प्रधानमंत्री जी ने दिया था कि इस प्रकार की दुर्घटनाओं को रोकने के लिए सख्त कदम उठाए जायेंगे। मैं जानना चाहता हूं कि सरकार की ओर से क्या-क्या कदम उठाए गए हैं और कौन से कदम उठाये जाने वाले हैं? इन बातों पर क्या आप यहां रोशनी डाल सकेंगे? क्या आप बता सकेंगे कि इस तरह की दुर्घटनाओं में होने वाली क्षति को कम करने के लिए आपने क्या नई व्यवस्था सोची है, यह सदन को जानने की इच्छा है। आप अगर रीएक्ट कर सकें तो आपकी बड़ी कृपा होगी।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे) : मंत्री जी, क्या आप इसके ऊपर रीऐक्ट करेंगे?

श्री चतुरानन मिश्र: आप नहीं कहतीं तो न भी करता लेकिन जब आप कहती हैं तो करना ही पड़ेगा।

जब प्रधानमंत्री जी ने आश्वासन दिया है, उसके बाद क्या कृषि मंत्री का आश्वासन चाहिए? ...(व्यवधान)

श्री नरेन्द्र मोहन: प्रधानमंत्री जी का आश्वासन कब तक पूरा हो सकेगा, यह हम जानना चाहते हैं। ...(व्यवधान)

श्री चतुरानन मिश्र: देखिए यह तो उन्होंने पूछा नहीं। प्रधानमंत्री के बाद कृषि मंत्री का आश्वासन नहीं होता। प्रधानमंत्री जी ने जो आश्वासन दिया है उसका कार्यान्वयन होगा। इस बारे में हम प्रधानमंत्री जी को खबर कर देंगे कि सदन में इस पर गहरी चिंता प्रकट की गई है।

उपसभाध्यक्ष (कुमारी सरोज खापर्डे): भारती रे जी और बाकी लोग इंतजार कर रहे हैं। लेकिन मुझे लगता है कि आज फ्राइडे होने की वजह से एक बजे बाद कोई बैठने के मूड में नहीं है। इस बात को ध्यान में रखकर मुझे लगता है कि I should adjourn the House till 2.00 P.M.

I adjourn the House for lunch till 2.00 P.M.

The House then adjourned for lunch at five minutes past One of the clock.

The House reassembled after lunch at eight minutes past two of the clock,

The Vice-Chairman (Shri G. Swaminathan) *in the chair.*

ANNOUNCEMENT RE: GOVERNMENT BUSINESS FOR THE WEEK COMMENCING 28TH JULY, 1997

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI G. SWAMINATHAN): I have to inform hon. Members that the Business Advisory Committee at its meeting held on Thursday, the 24th July, 1997 recommended that the following business be taken up during the week commencing Monday, the 28th July, 1997:-